6

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

आप इस बात से सहमत होंगे कि देश को गौरव दिलाने में महिलाओं की भागीदारी बहुत महत्त्वपूर्ण है। कई महिलाओं ने अपनी शक्ति, उत्साह और लगन के सहारे अनेक क्षेत्रों में बहुत नाम कमाया है। फ़िल्म-संगीत की ही बात करें, तो आप लता मंगेशकर को याद करेंगे। ओलंपिक की स्पर्धाओं के संदर्भ में आप 'उड़नपरी' पी.टी. उषा, कर्णम मल्लेश्वरी और सुनीता रानी को याद करेंगे। इसी प्रकार, सांस्कृतिक क्षेत्र में सरोजिनी नायडू को और राजनीति के क्षेत्र में अरुणा आसफ़ अली को याद करेंगे, जिनका नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज़ है। इंदिरा गांधी को भारत तो क्या, पूरी दुनिया कभी भूल नहीं पाएगी।

गरीबों और कुष्ठ रोगियों की सेवा के द्वारा मदर टेरेसा ने संत की ऊँचाई पा ली। क्या आपने भी ऐसी प्रसिद्ध महिलाओं के बारे में सुना है? आइए, भारत की ऐसी ही दो बहादुर बेटियों के विषय में पढ़ें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- वर्तमान समाज में स्त्री के जीवन और कार्य-क्षेत्र के प्रति उसकी सजगता को समझ कर उसका उल्लेख कर सकेंगे;
- सामाजिक दबावों के बीच अपनी पहचान स्थापित करने के लिए किए गए स्त्री-संघर्ष की व्याख्या कर सकेंगे;
- स्त्री की शारीरिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक सबलता का विश्लेषण कर सकेंगे;
- आदर्श महिलाओं की उपलब्धियों का वर्णन कर सकेंगे;

टिप्पणी

- आधुनिक सफल नारी के आत्मविश्वास और स्वावलंबन का उल्लेख कर सकेंगे;
- समाज के लिए नारी-शक्ति की उपयोगिता तथा उसके महत्त्व को व्याख्यायित कर सकेंगे;

क्रियाकलाप-6.1

नीचे दिए चित्रों को ध्यान से देखिए और बताइए कि ये चित्र किनके हैं :

क..... ख..... ग.....

इनके और अधिक चित्र तथा विवरण एकत्रित कर फ़ाइल तैयार कीजिए।

6.1 मूल पाठ

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः' अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवताओं का निवास होता है यानी वहाँ सुख-समृद्धि, शांति होती है। यह बात प्राचीन काल में मनुस्मृति में कही गई थी। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उस वक्त नारी का सम्मान नहीं होता था और यह बात नारी के सम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कही गई थी। बल्कि यह बात अनुभव से कही गई थी। प्राचीनकाल में हमारे देश में नारी समाज की बहुत ही सम्माननीय सदस्य थी। गार्गी, मैत्रेयी, गौतमी, अपाला आदि प्राचीनकाल की प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित नारियाँ हैं। प्राचीनकाल से ही नारियाँ हमारे देश में पुरुष के बराबर बैठती रही हैं और समाज के निर्माण–कार्यों में अपना योगदान देती रही हैं।

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

आधुनिक काल में भी नारी एक बार फिर से अपनी पूरी क्षमता, शक्ति और साहस के साथ समाज में दिखाई देने लगी। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से वह पूरी तरह आत्मविश्वास से भर गई। आप आज़ादी की लड़ाई का उदाहरण ही लीजिए। भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, कैप्टन लक्ष्मी सहगल आदि बहुत सारे नाम आपके जेहन में आते जाएँगे। गांधीजी के एक आह्वान पर न जाने कितनी महिलाएँ घर-बार छोड़ कर देश की आजादी के लिए संघर्ष करने निकल पड़ीं। चाहे वो गाँव की हों, छोटे कस्बे की हों, शहर की हों, या महानगर की हों, चाहे वे पढ़ी लिखी हों, चाहे गरीब हों या अमीर, सभी वर्गों की नारियाँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई में घर से बाहर निकल पड़ी थीं।

आजादी के बाद, वर्तमान समय में, जब शिक्षा और तकनीक की सुविधाएँ बढ़ी हैं, तो महिलाओं ने एक बार फिर से अपनी क्षमता, साहस और बुद्धिमता का परिचय देना शुरू कर दिया।

चित्र 6.1

आज, जब यह कहा जाता है कि महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं हैं तो इसलिए नहीं कि उनके प्रति दया-भावना है, बल्कि उन्होंने यह बात सिद्ध कर दिखाई है। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसमें महिलाओं की भागीदारी नहीं है– चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, प्रशासन हो, राजनीति हो, अर्थव्यवस्था, व्यापार या तकनीक क्षेत्र हो– हर जगह आपको महिलाएँ काम करती नज़र आएँगी। अब तो हिमालय की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट तक पहुँचने, अंतरिक्ष यान की यात्रा करने और पुलिस-प्रशासन के क्षेत्र में भी महिलाओं ने सफलता अर्जित कर ली है। आज चाहे हवाई जहाज़ उड़ाने का काम हो, रेल इंजन चलाने का काम हो, बस या ऑटो रिक्शा चलाने का काम हो या पेट्रोल पंपों पर पेट्रोल भरने का ही काम क्यों न हो– हर काम अब महिलाएँ कर रही हैं। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में हवाई जहाज़ के इंजन ठीक करने से लेकर स्कूटर ठीक करने तक में महिलाएँ सक्रिय हैं। इतना ही नहीं, अब तो उन्होंने पूरी दुनिया में सिद्ध कर दिखाया है कि महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक क्रियाशील, ईमानदार तथा कुशल प्रशासक होती हैं।

आज समाज का चाहे जो भी वर्ग हो, हर वर्ग की महिलाएँ समाज- निर्माण के कार्य में आगे आ रही हैं। चाहे वे साधारण परिवार में पली-बढ़ी हों, मध्यम परिवार में पली हों या बिल्कुल निर्धन परिवार में, कोई भी अभाव उनकी क्षमता के आगे बौना ही साबित होता है। महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि कठिनाइयाँ चाहे जितनी बड़ी हों,

टिप्पणी

मुश्किलें चाहे जितनी विकराल हों, यदि साहस और आत्मविश्वास है, तो दुनिया का कोई भी कार्य कठिन नहीं है। यही कारण है कि महिलाओं ने न केवल अपने देश में, बल्कि विदेशों में भी भारत का नाम ऊँचा किया है। चाहे वह फ़िल्म-निर्माण या अभिनय का क्षेत्र हो, फ़ैशन का क्षेत्र हो, चिकित्सा का क्षेत्र हो, अनुसंधान का या अन्य कोई क्षेत्र– हर क्षेत्र में अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है। अमेरिका और ब्रिटेन में ही चले जाएँ, जो कि दुनिया के शक्तिशाली देशों में गिने जाते हैं, वहाँ भारत की महिलाएँ चिकित्सा, कानून तथा फिल्म-निर्माण के क्षेत्र में पुरुषों से कहीं आगे हैं।

भारत की आधुनिक महिलाओं की बात करते हुए हम केवल अंतरिक्ष विज्ञान तथा खेल को ही लें, तो जो नाम सबसे पहले हमारे सामने आते हैं, वे हैं–कल्पना चावला, और बचेंद्री पाल। ये दो महिलाएँ अब भारतीय महिला के अदम्य साहस, बुद्धि कौशल और कर्त्तव्य निष्ठा की प्रतीक बन चुकी हैं। ये महिलाएँ किसी बहुत बड़े या संपन्न परिवार से नहीं आई हैं, न इन्हें कुछ ज़्यादा सुख-सुविधाएँ ही प्राप्त थीं। इनका पालन-पोषण भी सामान्य भारतीय लड़कियों की तरह ही हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा भी सामान्य लोगों की तरह ही हुई थी। जब इन्होंने अपने लक्ष्य की तरफ़ बढ़ना शुरू किया था, तब सामान्य लड़कियों की तरह ही इनका भी विरोध हुआ था, लेकिन इन्होंने अपने साहस और आत्मविश्वास के बल पर लोगों के विरोध या प्रतिकार पर ध्यान नहीं दिया और अपने लक्ष्य की तरफ़ आगे बढ़ती रहीं।

कल्पना चावला: अंतरिक्ष में पहली भारतीय महिला

कल्पना चावला का जन्म हरियाणा प्रांत के करनाल शहर में 1961 की पहली जुलाई को एक साधारण व्यापारी परिवार में हुआ था। पिता बनवारी लाल एक साधारण व्यापारी थे तथा माँ संयोगिता एक सामान्य गृहिणी। कल्पना की पढ़ाई-लिखाई भी सामान्य लड़कियों की तरह उनके शहर के स्कूल से शुरू हुई थी, लेकिन कल्पना ने अपने लक्ष्य को ध्यान में रखा और साहस के साथ आगे बढ़ती रहीं। जब कल्पना 11वीं कक्षा में पढ़ती थीं, तब अमेरिकी अंतरिक्ष यान 'बाइकिंग' मंगल ग्रह पर उतरा था। इस बात से कल्पना इतनी रोमांचित हुईं कि उन्होंने अपनी कक्षा की परियोजना में मंगल ग्रह को दर्शाया। शुरू से ही कल्पना के मन में अंतरिक्ष-विज्ञान के प्रति लगाव रहा और वे अंतरिक्ष की यात्रा के सपने देखती रहीं। शायद यही कारण है कि परिवार वालों के लाख मना करने के बाद भी उन्होंने चंडीगढ़ के पंजाब इन्जीनियरिंग कॉलेज

चित्र 6.2

शब्दार्थ
अंतरिक्ष = आकाश; ग्रहों या तारों के बीच की शून्य जगह

टिप्पणी

एअरोनॉटिक्स = वैमानिकी; विमान-विज्ञान
एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग = वैमानिक अभियांत्रिकी; वैमानिकीय इन्जीनियरी

विशेषज्ञ = किसी विषय का विशेष जानकार
अभियान = मिशन; लक्ष्य

में एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग (वैमानिकी) को अपना विषय चुना। इसके लिए उनके सहपाठी उनका मज़ाक उड़ाते रहे कि देखो अब लड़कियाँ भी एअरोनॉटिकल इन्जीनियर बनने चली हैं, लेकिन उन्होंने किसी की परवाह नहीं की। 1982 में इन्जीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर कल्पना अपने परिवार वालों के कठोर विरोध के बावजूद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका चली गईं। वहाँ उन्होंने टेक्सास विश्वविद्यालय एअरोस्पेस इन्जीनियरिंग में एम.एस. की डिग्री ली। तत्पश्चात्, बोल्डर में कोलराडो विश्वविद्यालय से 1988 में एअरोस्पेस में पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। इस तरह उनके अंतरिक्ष में जाने के सपने के साकार होने का भी वक्त आ गया। जब अमेरिकी अंतरिक्ष यान के कोलंबिया मिशन के लिए वैज्ञानिकों का चुनाव हो रहा था, तब 2962 प्रतियोगियों में उन्हें सर्वाधिक योग्य पाया गया और उस मिशन का विशेषज्ञ बनाया गया। इसके लिए कल्पना ने कठोर प्रशिक्षण लिया और 19 नवंबर को पहली बार अंतरिक्ष की यात्रा पर निकल पड़ीं। जब वह अंतरिक्ष में थीं तब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री इंद्र कुमार गुजराल ने उनसे बात करके उन्हें इस अभियान के लिए बधाई दी। उनका यह अभियान काफ़ी सफल रहा और इस दौरान उन्होंने कई नए प्रयोग कर सबसे अपनी योग्यता का लोहा मनवा लिया।

चित्र 6.3

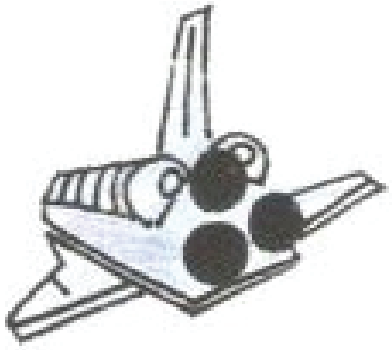

फिर जब अमेरिका के अंतरिक्ष यान कोलंबिया के दूसरी बार अंतरिक्ष में जाने का कार्यक्रम बना, तो एक बार फिर कल्पना को उसके अभियान-दल में शामिल किया गया। 16 जनवरी, 2003 को कल्पना एक बार फिर 'केनेडी अंतरिक्ष केंद्र' से अंतरिक्ष की यात्रा पर निकल पड़ीं। 16 दिन के इस अभियान में 80 प्रयोग किए गए, जिनमें मानव-शरीर, कैंसर कोशिकाओं की परीक्षा और कीट-पतंगों पर भारहीनता संबंधी प्रयोग शामिल थे। 29 जनवरी, 2003 को इस अभियान-दल के यात्रियों ने अपने इस मिशन को कामयाब बताया। लेकिन दुर्भाग्य कि 16 दिन की अपनी सफल यात्रा के बाद जब यह अभियान– दल 1 फ़रवरी, 2003 को पृथ्वी पर लौट रहा था, तो पृथ्वी से कुछ मिनट की दूरी पर ही

चित्र 6.4

टिप्पणी

इस दल का यान भयानक विस्फोट के साथ नष्ट हो गया और अपने अभियान-दल के बाकी सात साथियों के साथ अंतरिक्ष की यह बेटी अंतरिक्ष में ही खो गई।

कल्पना के इस दुर्भाग्यपूर्ण अंत से पूरी दुनिया स्तब्ध रह गई। भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संसद में कल्पना के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए घोषणा की कि उनकी स्मृति में अंतरिक्ष-यान 'मेट सेट' का नाम 'कल्पना–1' रखा जाएगा।

इस प्रकार अदम्य साहस, दृढ़ इच्छा शक्ति और कर्त्तव्य-निष्ठा के बल पर भारत की बेटी कल्पना ने न सिर्फ़ महिला जाति का नाम ऊँचा किया, बल्कि पूरे देश का नाम भी विश्व-इतिहास में सुनहरे अक्षरों में अंकित कर दिया।

पाठगत-प्रश्न-6.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. जब पहली बार कल्पना चावला अंतरिक्ष में थीं, तब भारत के प्रधानमंत्री ने –

   (क) उन्हें ऐसे ख़तरे न उठाने की सलाह दी। ☐

   (ख) उन्हें जल्दी से जल्दी पृथ्वी पर लौट आने को कहा। ☐

   (ग) उन्हें कहा कि महिलाओं के लिए ऐसे करतब ठीक नहीं। ☐

   (घ) उन्हें इस अंतरिक्ष अभियान के लिए बधाई दी। ☐

2. पढ़े हुए अंश के आधार पर निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में लिखिए :

   (क) 16 जनवरी 2003 को 'केनेडी अंतरिक्ष केंद्र' से आसमान में उड़े अंतरिक्ष-यान में बैठे लोगों में से एक कल्पना चावला भी थीं। ☐

   (ख) 'कोलंबिया मिशन' के लिए कल्पना भी चुन ली गई। ☐

   (ग) अपने सात साथियों के साथ 1 फ़रवरी, 2003 की शाम अंतरिक्ष की बेटी अंतरिक्ष में समा गई। ☐

   (घ) बोल्डर में कोलराडो विश्वविद्यालय से कल्पना चावला ने सन् 1988 में एअरोस्पेस में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। ☐

   (ङ) कल्पना चावला ने एअरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की डिग्री चंडीगढ़ इंजीनियरिंग कॉलेज से ली। ☐

   (च) हरियाणा राज्य के करनाल शहर के एक सामान्य व्यापारी बनवारी लाल के घर में एक साधारण गृहिणी संयोगिता ने सन् 1961 की पहली जुलाई को एक बिटिया को जन्म दिया, जो कल्पना कहलाई। ☐

3. दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए :

कल्पना की दुखद मृत्यु के पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री ने विशेष घोषणा की कि –

(क) कल्पना को सभी भारतीय वैज्ञानिक श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। ☐

(ख) मेट-सेट अब कल्पना–1 के नाम से जाना जाएगा ☐

(ग) हमें ऐसे ख़तरे आगे भी उठाते रहने होंगे। ☐

(घ) अंतरिक्ष से जुड़े शोध-कार्य कभी भी रुकने नहीं चाहिए। ☐

4. एअरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को अपना विषय चुनने पर कल्पना चावला के सहपाठियों ने उसका मजाक उड़ाया। क्या आपके सही होने पर भी कभी आपके साथियों ने आपको गलत साबित करने की कोशिश की? तब आपने क्या किया?

(क) अपने साथियों की बात को मान लिया। ☐

(ख) उस दिशा में आगे न बढ़ने का निश्चय किया। ☐

(ग) साथियों से जानने का प्रयास किया कि सही क्या है। ☐

(घ) अपने साथियों को अपनी बात समझाते हुए अपना कार्य जारी रखा। ☐

6.1.2 बचेंद्री पाल : पहली महिला एवरेस्ट विजेता

कल्पना चावला की तरह ही बचेंद्री पाल भी साहस की पर्याय हैं। बचेंद्री को एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त है। बचेंद्री का जन्म सन् 1954 में चमोली जिले में परंपरागत पुरुष-वर्चस्व वाले एक साधारण भारतीय परिवार में हुआ था। पिता किशनपाल सिंह और माँ हंसादेई नेगी की पाँच संतानों में बचेंद्री तीसरी संतान हैं। बचेंद्री के बड़े भाई को पहाड़ों पर चढ़ना अच्छा लगता था, लेकिन जब बचेंद्री उनके साथ पहाड़ पर जाने की बात करती थीं, तो उन्हें डाँट कर मना कर दिया जाता था। इससे बचेंद्री का मनोबल और बढ़ा और पहाड़ पर चढ़ने की इच्छा दृढ़ होती गई। उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे भी वही करेंगी, जो लड़के करते हैं। वे किसी से पीछे

चित्र 6.5

शब्दार्थ

पर्वत-शिखर = पहाड़ की चोटी;

ज़ेहन = दिमाग

तानाशाह = अपनी ही बात मनवाने वाला; किसी की बात न मानने वाला

सर उठाने का मौका = गर्व करने का अवसर

जज़्बा = हौसला